श्री अभिनंदननाथ जिन पूजन

स्थापना

(अडिल्ल छंद)

परम पूज्य अभिनंदन नाथ जिनेश हैं,
कोटिक रवि शशि तेज धरे परमेश हैं।
पुण्योदय से आज शरण में आ गया,
वीतराग चिद्रूप हृदय को भा गया।।1।।
बिना आपके काल अनंता हो गया,
गुरू कृपा से भक्त आपका हो गया।
मन मंदिर में प्रभु बुलाने आया हूँ,
पूजन करके जिनगुण पाने आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(नरेन्द्र छंद)

तन की प्यास बुझाने वाला, सरिता का जल लाया।
आत्म तŸव की प्या जगा दे, वह जल पाने आया।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का ताप मिटाने वाला, शीतल चंदन भाया।
राग आग संताप मिटाने, आप शरण में आया।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शुद्ध अक्षय पद पाने, भावाक्षत ले आया।
भव समुद्र से पार उतरने, नोका पाने आया ।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अपनी अनुकंपा से जिनवर, इतनी शक्ती देना।
विषय भोग से हार गया हूँ, कामजयी कर देना।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों से भूख मिटी ना, क्षुधा रोग है भारी।
निज आतम अनुभच चरु पाने, आया शरण तिहारी ।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे ही मिथ्यात्व कर्म से, छाया है अंधियारा ।
प्रभो आपके चरण दीप से, पाऊँ मैं उजियारा ।।

हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म शत्रु से करी मित्रता, इसका ही फल पाया।
चउ गतियों में भ्रमण कराया, कर्मों की ये माया।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
अशुभ भाव के कारण मैंने, कभी नहीं सुख पाया।
संवर और निर्जरा द्वारा, शिवपथ पाने आया ।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो आपके दर्शन पाकर, जिन दर्शन ना पाया।
सिद्धक्षेत्र का आसन पाने, अर्घ्य सजा के लाया ।।
हे अभिनंदन स्वामी मेरे, देहालय में आना।
दर्शन देकर दुष्कर्मों से, मुझको नाथ छुड़ाना।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

विजय विमान से आयेप्रभुजी, नगरी लगती अतिशायी।
शुभ वैशाख शुक्ल षष्ठी को, माँ सिद्धार्थी हर्षायी।।1।।
ऊँ हीं वैशाखशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ शुक्ल बारस को स्वामी, अभिनंदन ने जन्म लिया।।
नृपति स्वयंवर के प्रांगण में, इंद्र शचि सुर नृत्य किया।।2।।
ऊँ हीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नश्वर बादल को लख प्रभु ने, संयम अंगीकार किया।
माघ शुक्ल द्वादश को लौकांतिक देवों ने गान किया ।।3।।
ऊँ हीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पौष शुक्ल की चतुर्दशी को केवलज्ञान उपाया था।
समवसरण की रचना करके, धनपति अति हर्षाया था ।।4।।
ऊँ हीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वैशाख शुक्ल षष्ठी के दिन, सम्मेद शिखर से मोक्ष हुआ।
श्री अभिनंदन तीर्थंकर से, भवि जीवों को लक्ष्य मिला ।।5।।
ऊँ हीं वैशाखशुक्लषष्ठयां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं श्रीअभिनंदननाथजिनेन्द्राय नमो नमः ।

जयमाला

(मुक्तः पद्धरि छंद)

जय अभिनंदन जिनवर महान, गुण गाता है सारा जहान।
हे त्यागमूर्ति वात्सल्य धाम, तीर्थंकर को शत-शत प्रणाम ।।1।।
चौथे तीर्थंकर आप नाथ, पाकर वसुंधरा हुई सनाथ।
सोलह वर्षो तक मौन रहे, फिर क्षपक श्रेणी आरूढ़ हुये।।2।।

घाति क्षय कर अरिहंत हुये, भवि जीवों के शिवपंथ हुये।
प्रभु तीन अधिक थे शत गणधर, श्री वज्रनाभि पहले श्रुतधर ।।3।।
थी मुख्य मेरूषेणा आर्या, सुर नर पशु गण दर्शन पाया ।
करके विहार उपकार किया, भव्यों का प्रभु कल्याण किया।।4।।
प्रभु आप नंत गुण के भंडार, वंदन से हो सब दुःख क्षार।
प्रभु की अमृत झरणी वाणी, है परम् प्रमाणी जिनवाणी ।।5।।
निज आत्म तŸव है उपादेय, है भाव विकारी नित्य हेय।
है जीव तŸव उपयोगमयी, बिन चेतन तŸव अजीव सही ।।6।।
आश्रव औ बंध अहितकारी, संवर औ निर्जर हितकारी।
जो रत्नत्रय आश्रय लेते, वे मुक्तिरमा को वर लेते।।7।।
प्रभु ने इस विध उपदेश दिया, पथ भूलों को संदेश दिया।
मैं त्याग करूँ बहिरातम का, औ लक्ष्य करूँ परमातम का ।।8।।
अंतर आतम होकर स्वामी, बन जाऊँ मैं शिवपथ गामी।
जय-जय जिनवर महिमा निधान, भगवन् कर दो अब कर्म हान।।9।।
तुम कर्म विजेता जगन्नाथ, मेरी भव व्याधि हरो नाथ।
नहीं माप सके जलधि अथाह, जल बिम्ब पकड़ने का प्रयास ।।10।।
त्यों गुण वर्णन करना जिनवर, है अल्पमति मेरी प्रभुवर।
मैं करूँ भाव से पद प्रणाम, प्रभु देना निश्चित मुक्तिधाम ।।11।।

घत्ता
चौथे तीर्थंकर, भव्य हितंकर, किस विध हम गुणमान करें।
प्रभु कृपा कीजिये, ज्ञान दीजिये, तव चरणों में आन खड़े।।2।।
घत्ता
अभिनंदन स्वामी, हे जगनामी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।
।। इत्याशीर्वादः।।